नभप्रभा

उत्तरीय और दक्षिणी रोशनी की कहानी

रिचर्ड टी. पार, चित्र: एंड्रे लोथे

नभप्रभा

उत्तरीय और दक्षिणी रोशनी की कहानी

रिचर्ड टी. पार, चित्र: एंड्रे लोथे

हिंदी अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

Hindi translation of
Aurora : A Tale of the Northern and Southern Lights
By Richard T. Parr, Illustrated by Endre Lothe

नभप्रभा

उत्तरीय और दक्षिणी रोशनी की कहानी

रिचर्ड टी. पार, चित्र: एंड्रे लोथे

समर्पण:

मेरी बहन जीन को

और उन सभी लोगों को जो अभी भी क्रिसमस के जादू में विश्वास रखते हैं!

नभप्रभा

क्या आपने कभी उस शानदार पक्षी के बारे में सुना है

जो अंधेरे, ध्रुवीय आकाश में उड़ता है?

और जिस पर सुन्दर राजकुमारी, लंबे सुनहरे बालों के साथ

सूर्योदय तक उसकी पीठ पर सवारी करती है?

क्या आपने इस स्वर्गीय पक्षी के बारे में नहीं सुना है

जिसके पंख, झिलमिलाती रोशनी के बने हैं?

चमकीले नीले हरे और लाल रंग की सोने के कलगी लगाए,

जो लंबी ध्रुवीय रात का अंत करके, भोर लाता है!

जब मैं बहुत छोटा था, तो मैं क्रिसमस की पूर्व संध्या पर अपने घर से भाग गया. मुझे लगा कि सांता क्लॉस जैसा कोई इंसान नहीं था. जब मैं सो रहा था तो सांता नहीं आया और न ही उसने पेड़ के नीचे मेरे लिए उपहार छोड़े जैसा कि मुझे बताया गया था. उसकी बजाए, लोगों ने उपहार खरीदे और एक-दूसरे को भेंट किए. और फिर मुझे लगा कि क्रिसमस पर सच में यही होता होगा - उपहार खरीदकर दूसरों को देना.

"कोई सांता क्लॉज़ नहीं है! कोई सांता क्लॉज़ नहीं है!" उस रात अपने गर्म बिस्तर पर लेटे हुए मैंने इसे बार-बार दोहराया. मैंने उन सभी क्रिसमस उपहारों के बारे में भी सोचा जो मुझे अपनी माँ और पिता के बेडरूम की अल्मारी में मिले थे, और जिन पर मेरा नाम लिखा था.

सांता उन उपहारों को नहीं लाया था - मेरे माता-पिता उन्हें लाए थे! जब सब अपने-अपने उपहार खोलेने के बाद मुझसे पूछेंगे कि मैंने उनके लिए क्यों कुछ नहीं खरीदा, तब भला मैं उन्हें क्या जवाब दूंगा? इसलिए मैंने घर से भागने का फैसला किया.

सभी लोगों के सो जाने के बाद, मैंने अपने फर वाले जूते और ऊनी चोगा (परका) पहना और अपने बेडरूम की खिड़की से बाहर निकल गया. कड़ाके की ठंड थी और रात में तेज़ी से चलते हुए मेरी सांस एक सफेद बादल की तरह जम रही थी. मेरे जूतों के नीचे बर्फ इतनी ज़ोर से चरमरा रही थी कि मुझे लगा कि वो आवाज़ मेरे माता-पिता को जगा देगी और वे मेरे पीछे-पीछे दौड़े आएंगे. हरी रोशनी धीरे-धीरे अंधेरे आकाश में बर्फ को रोशन करते हुए आगे बढ़ रही थी. उसके कारण मेरे लिए घर के पीछे वाली पहाड़ी के ऊपर चढ़ना आसान हो गया. मुझे पता था कि मेरे माता-पिता सुबह को मेरे पदचाप ज़रूर ढूंढ लेंगे. इसलिए मैंने रात भर चलने की और जंगल में छिपने की योजना बनाई ताकि वे मुझे न ढूंढ पाएं.

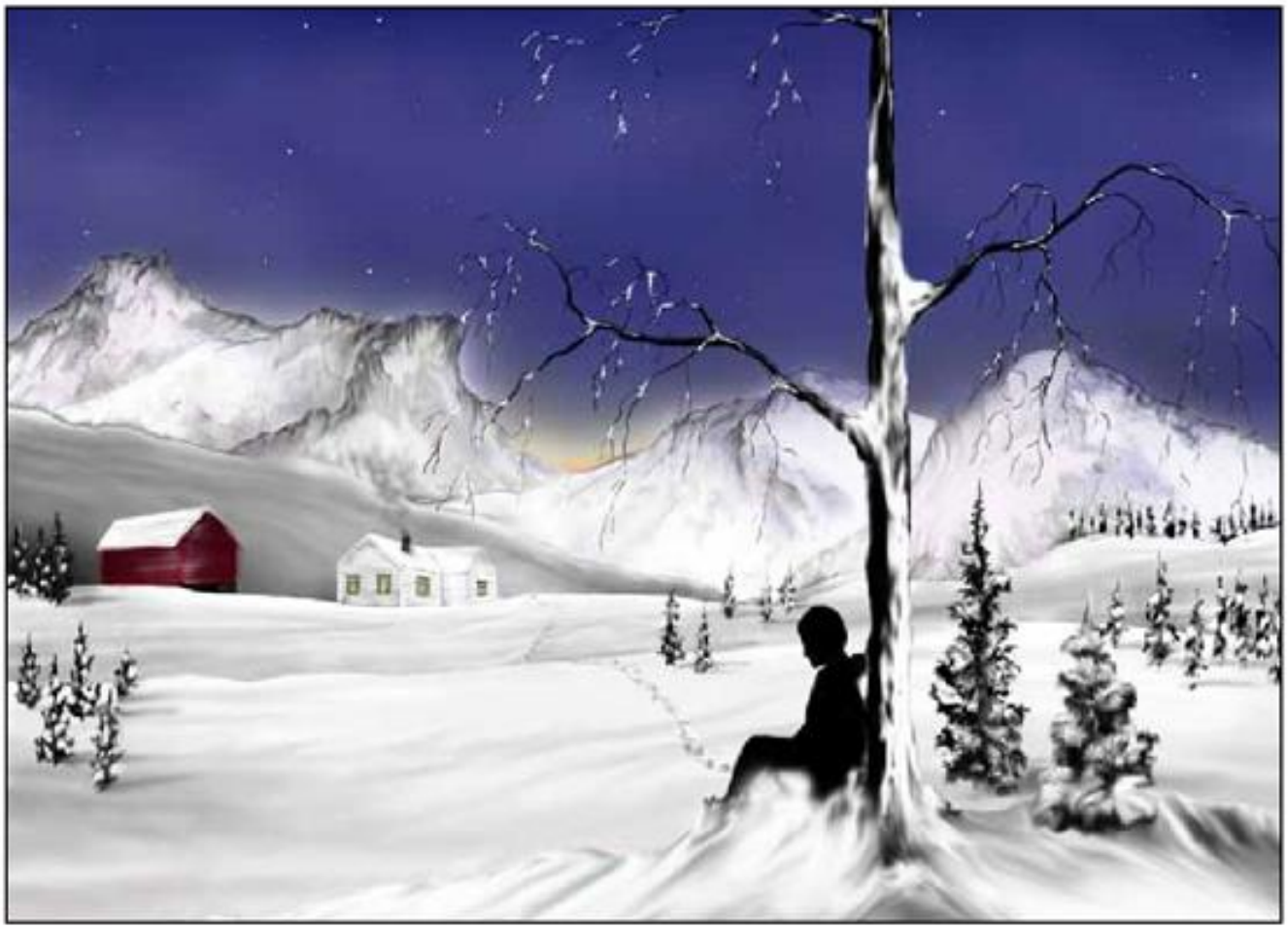

घुटने तक गहरी बर्फ में, पहाड़ी पर चढ़ने में मुझे काफी समय लगा. चोटी पर पहुंचने से पहले मेरे पैर दर्द करने लगे और मेरे फेफड़ों में ठंड से जलन महसूस हुई. फिर मैं एक भोजपत्र के पेड़ के सहारे कुछ देर आराम करने बैठ गया. मैंने ठंड से बचने के लिए अपना परका अपने चेहरे पर कसकर खींचा और हाथों को गर्म रखने के लिए उन्हें जेब में डाल दिए. मैंने अपने क्रिसमस उपहारों और सांता के असली नहीं होने के बारे में सोचा. जब माता-पिता सुबह उठकर मुझे नहीं पाएंगे तो फिर वे क्या सोचेंगे? उसके बाद शायद मैं सो गया, क्योंकि कुछ समय बाद मुझे अचानक एक बूढ़े आदमी ने जगाया. बूढ़े की दाढ़ी एकदम उस बर्फ जैसी सफेद थी, जिस पर मैं बैठा था. उसकी आँखें आसमान के तारों की तरह टिमटिमा रही थीं.

"चलो ठीक है," जब उसने मुझे जागा हुआ देखा तो गंभीर आवाज़ में कहा, "तुम यहाँ ठंड में क्या कर रहे हो? इस वक़्त तुम्हें घर में बिस्तर पर लेटे होना चाहिए, और सांता क्लॉज़ के आने का इंतज़ार करना चाहिए."

"देखो, कोई सांता क्लॉज़ नहीं होता," मैंने अपनी आँखों से नींद और ठंड को रगड़ते हुए कहा. "लोग, एक-दूसरे के लिए उपहार खरीदते हैं. और फिर झूठ-मूठ यकीन करते हैं कि सांता क्लॉज़ और उसके बारहसिंघे उन्हें लाए थे."

"तुम्हारी बात सच है," बूढ़े ने एक पल बाद मेरी ओर देखा और कहा. "हाँ, ठीक है, ज्यादातर लोग उपहार खरीदते हैं. लेकिन सांता क्लॉज़ में विश्वास बंद करने का यह कोई कारण नहीं हो सकता, क्यों? इस साल तुमने अपने परिवार के लिए क्या खरीदा है?"

"कुछ भी नहीं," मैंने जवाब दिया, "मैंने सोचा था कि सांता सभी के लिए उपहार लाएगा. लेकिन फिर मुझे पता चला कि सांता असली नहीं, झूठ-मूठ का था! इसलिए मैंने घर से भागने का फैसला किया ताकि लोग, मुझे कुछ भी न खरीदने के लिए चिढ़ाएं नहीं."

"ठीक है," उसने मेरे बगल की बर्फ में बैठते हुए कहा, "मुझे नहीं लगता कि वे ऐसा कुछ करेंगे. लेकिन अगर तुमने भागने का अपना मन बना लिया है, तो तुमने काफी अच्छी प्रगति की है. क्या नीचे घाटी में, वही तुम्हारा घर है जिसकी चिमनी में से धुआँ निकल रहा है?"

मैंने हाँ कहा. मुझे लगा कहीं वो मुझे वापस घर न ले जाए और मेरे माता-पिता को जगाकर उन्हें यह न बताए कि मैंने भागने की कोशिश की थी. पर उसने पहले मेरी तरफ देखा और फिर ऊपर आसमान की तरफ देखा.

"यदि तुम्हारे पास सभी को देने के लिए उपहार होते तो फिर तुम घर से भागकर सभी घरवालों को दुखी नहीं करते, क्यों ठीक है न?"

"लेकिन मेरे पास देने के लिए कोई उपहार नहीं है," मैंने विरोध किया. मैं रोने लगा, क्योंकि मैं थका हुआ और मेरा शरीर एकदम ठंडा था, और मुझे यह तक नहीं पता था कि मैं क्या करूं या कहाँ जाऊं. बूढ़े ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और मुझे दिलासा दिलाई.

"देखो, मेरे पास एक ऐसा उपहार है जो तुम अपने घरवालों को दे सकते हो," बूढ़े ने गर्मजोशी से कहा. "और वो एक ऐसा उपहार है जिसे घरवाले जीवन भर याद रखेंगे! और वे यह कभी नहीं भूलेंगे कि वो उपहार उन्हें किसने दिया था!"

"अच्छा?" मैंने सीधे बैठते हुए कहा. "वो उपहार क्या है?" मैंने दस्ताने से अपने आंसू पोंछते हुए पूछा. मैं अचरज कर रहा था कि क्या वो उपहार उसकी जेब में रखा होगा. क्योंकि उसकी जैकेट बहुत बड़ी थी, और उसमें बड़ी, गहरी जेबें भी थीं.

"सभी क्रिसमस उपहार एक पेड़ के नीचे पड़े हुए नहीं मिलते हैं," उसने मेरे विचारों को पढ़ते हुए मुस्कुराते हुए कहा. "और कुछ उपहारों को तुम देख भी नहीं सकते हो - जैसे एक कहानी को!"

"एक कहानी!" मैंने हैरान होकर कहा. "एक कहानी?"

"हाँ एक कहानी! उसे सुनने के बाद, कल सुबह जब परिवार के लोग अपने-अपने उपहार खोल चुके हों, तब तुम सभी को यह कहानी सुना सकते हो. और वो तुम्हारी ओर से उनके लिए क्रिसमस का उपहार होगा! बताओ, तुम्हें क्या लगता है?"

"क्या वो सच में एक मज़ेदार कहानी है?" मैंने पूछा. मुझे डर था कि कहीं वो हंसकर मेरा मजाक न उड़ाए.

"हाँ वो गज़ब की कहानी है," उसने कहा. "मैंने अपने जीवनकाल में तमाम कहानियाँ सुनी हैं, लेकिन इस तरह की कहानी पहले कभी नहीं सुनी! यह कहानी बहुत समय पहले घटी थी. वो कहानी मैंने आज तक किसी को नहीं सुनाई है. अच्छी कहानियाँ बड़ी मुश्किल से ही मिलती हैं, और सच में अच्छी कहानियाँ एक बेहतरीन उपहार होती हैं जिन्हें तुम लोगों को दे सकते हो! देखो, कहानियाँ हमेशा के लिए रहती हैं!"

"अच्छा, मुझे वो कहानी सुनाएं!" मैंने उत्सुकता से कहा. मैं यह भूल गया था कि मैं कितना ठंडा और थका हुआ था. "मुझे वो कहानी सुनाएँ ताकि कल सुबह मैं सभी को आश्चर्यचकित कर सकूं!" मैं काँप उठा और फिर उत्साह से मैंने अपने हाथों को आपस में रगड़ा. मैं बेसब्री से कहानी शुरू होने का इंतज़ार करने लगा.

बूढ़े ने मुझे अपनी जैकेट की तहों के भीतर से देखा और फिर उसने अपनी दाढ़ी को सहलाया. फिर उसने आकाश की ओर देखा और धीरे से सीटी बजाई. धीरे-धीरे ऊपर की ओर बढ़ती हुई हरे प्रकाश की लंबी धुंधली पट्टियां, अचानक लाल और पीले और नीले रंगों से ज्वलंत होकर चमक उठीं, और उनसे पूरा आकाश भर गया! प्रकाश की किरणें झिलमिलाती रहीं और पहाड़ों की चोटियों पर नाचती रहीं और घाटी के ऊपर-नीचे जगमगाती रहीं. ऐसा लगा जैसे जंगल और पहाड़ियों में आग लग गई हो! मैंने अपने जीवन में इतना सुंदर नज़ारा पहले कभी नहीं देखा था! मैंने हवा में एक सरसराहट की आवाज सुनी, जैसे मेरे ऊपर से कुछ उड़ रहा हो, लेकिन रोशनी इतनी तेज थी कि मैं सिर्फ उसका प्रकाश पुंज ही देख पाया!

"वो कहानी इस रोशनी के बारे में है जिसे तुम देख रहे हो, और वो लंबी ध्रुवीय रातों में कैसे आती है," बूढ़े ने मुस्कुराते हुए कहा. फिर वो नीचे झुका और उसने मेरा हाथ थाम लिया. "ध्यान से सुनो, क्योंकि यह तुम्हारे लिए मेरा उपहार है! मैं नहीं चाहता कि तुम इसका एक शब्द भी भूलो, या फिर जीवित रहने तक उस पर कुछ शक करो! और जब तुम्हारे पास क्रिसमस पर देने के लिए कोई और उपहार नहीं होगा, तब भी तुम यह कहानी दूसरों को सुना पाओगे!"

मैंने सिर हिलाया और उसका हाथ कसकर दबाया. उसने क्षितिज पर झिलमिलाती हुई बर्फ से ढकी चोटियों की ओर इशारा किया और आगे शुरू किया:

****

उत्तर में यहाँ से बहुत दूर बोरेलिस भूमि है. वो यहाँ से इतनी अधिक उत्तर में है कि वहां पहुंचने के लिए तुम्हें सबसे पहले उत्तरी-ध्रुव से गुजरना होगा और फिर जमे हुए ध्रुवीय सागर में तब तक चलना होगा जब तक तुम हवा के पीछे नहीं आ जाते! अंत में जब तुम उस स्थान पर पहुंचोगे जहां से हवा शुरू होती है, तब तुम उत्तरी हवा के घर - बोरेलिस में होगे. वो स्थान इतना उत्तर में है कि सर्दियों में वहां छह महीने तक सूरज नहीं उगता है और वहां हमेशा अंधेरा छाया रहता है. और गर्मियों में, जब अंत में सूर्य वापस लौटता है, तो वो रोज़ाना अस्त नहीं होता है, और अगले छह महीनों के लिए वहां पर दिन का उजाला छाया रहता है.

राजा बोरियस और उनका परिवार, हिम महारानी और उनकी बेटी, अरोरा, इस दूर-दराज़ के देश पर शासन करते हैं. वे ध्रुवीय सागर के तट पर एक सुंदर बर्फ के बने सफेद महल में रहते हैं जिसमें क्रिस्टल की बनी खिड़कियां हैं और हर कमरे में बर्फीले झूमर लटके हैं. महल के केंद्र में नृत्य के लिए एक बॉलरूम फर्श है जिसे नीली बर्फ से तराशा गया है, एक आंगन है जो पाले की भांति सफेद है! सर्दियों में सीपियों में रखी लंबी मोमबत्तियां प्रत्येक खिड़की में से चमकती हैं, और महल हीरे की तरह जगमगाता है. जहां तक आपकी नज़र जाएगी तुम सिर्फ चमकदार बर्फ ही देख पाओगे! और गर्मियों में, जब सूरज, क्रिस्टल की खिड़कियों से होकर बॉलरूम के फर्श पर चमकता है, तो महल इंद्रधनुष के सभी रंगों से जगमगा उठता है!

एक रात, सूरज ढलने के काफी बाद, राजा बोरियस ने अपनी बेटी अरोरा को, उसके शयनकक्ष की बालकनी पर खड़ा पाया. बेटी की आँखों में आँसू थे और वो टकटकी लगाए अंधेरे, सितारों वाले आकाश को, घूर रही थी.

"क्या बात है!" राजा ने कहा. "बताओ बेटी, क्या हुआ?"

"मुझे रात से बहुत परेशानी है!" अरोरा रोई. "यहाँ इतने लंबे समय से सिर्फ अंधेरा-ही-अँधेरा है, और मैं आसमान में सिर्फ तारे देख-देखकर एकदम थक गई हूँ! क्या आप सूरज को जल्दी वापस नहीं ला सकते, ताकि पक्षी वापस आ जाएँ और मैं नौकायन के लिए जा सकूँ और समुद्र के तट पर सीपियाँ इकट्ठी कर सकूँ?"

बोरियस एक बहुत शक्तिशाली राजा थे क्योंकि वो ही उत्तरी-हवा को नियंत्रित करते थे और उनकी पत्नी, हिम महारानी, बर्फ बनाती थीं. दोनों मिलकर बर्फ़ीले तूफ़ान बनाते थे जो लंबी ठंडी सर्दियों के दौरान ज़मीन को बर्फ से ढक देते थे. लेकिन उनमें से किसी को भी यह पता नहीं था कि सूर्य को उसके नियत समय से पहले कैसे लौटाया जाए. इसलिए, राजा ने अपने सभी सलाहकारों को बुलाया और उनसे पूछा कि सूर्य को जल्दी वापस लाने के लिए क्या किया जा सकता था, जिससे उनकी बेटी फिर से खुश हो सके. क्योंकि जब तक अरोरा नाखुश रहेगी तब तक राजा बोरियस और हिम महारानी भी नाखुश रहेंगे और जब राजा-रानी नाखुश होंगे तो उनके राज्य में हर कोई दुखी होगा!

राजा के सभी सफ़ेद बालों वाले सलाहकार, जो उम्र से झुक गए थे पर दुनिया के ज्ञान से भरे हुए थे, अपनी लंबी सफेद सोच वाली टोपियां पहनकर राजा की क्रिस्टल टेबल पर बैठे और रात में बहुत देर तक चर्चा करते रहे (अगर आपको याद हो, वहाँ रात, छह महीने लंबी होती थी!) लेकिन राजा की सारी आइसक्रीम खाने और अधिकांश आइस-वाइन पीने के बाद भी, उनमें से कोई भी राजा-रानी को यह नहीं बता सका कि सूरज को कैसे वापस लाया जाए.

तब राजा ने ठहाका लगाते हुए महान बर्फीले उल्लू से पूछा. ज्ञानी उल्लू आकाश में जो कुछ भी चल रहा होता था, उसके बारे में सब कुछ जानता था. सूरज को कैसे वापस लाया जाए? राजा ने यह सवाल उल्लू से पूछा.

फिर उल्लू ने अपने बड़े-बड़े सफेद पंख फैलाए, और राजा की मेज के चारों ओर बैठे सभी सलाहकारों को देखा.

"कौन? कौन? कौन जानता है सूरज को वापस लाना? मुझे यह बिल्कुल भी संभव नहीं लगता है!"

तब राजा ने निराशा में शक्तिशाली हिम भालू से पूछा, जो पूरे देश में होने वाली हर चीज को जानता था. भालू अपने पिछले पैरों के बल उठा, उसने बॉलरूम के चारों ओर देखा, और फिर वो तीन बार दहाड़ा, अंतिम बार वो इतनी जोर से दहाड़ा कि क्रिस्टल की बनी खिड़कियां टूट गईं, टेबल भी टूट गई और अपनी सीटों पर बैठे सलाहकार हिलने लगे.

"सूरज की वापिसी? तुम लोग गलत रास्ते पर हो!"

यह सुनकर राजा का चेहरा पीला पड़ गया और फिर उसने यूनिकॉर्न व्हेल से पूछा, जो समुद्र के नीचे की घटनाओं के बारे में सबकुछ जानती थी.

व्हेल ने अपने लंबे सींग को, सामने वाले फ्लिपर से सहलाया. फिर वो काफी लम्बे समय तक गंभीरता से सोचती रही.

"सूरज को उसके नियत समय से पहले लाना? उसके लिए क्या करना चाहिए वो मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है!"

फिर राजा ने मेज के चारों ओर अपने सलाहकारों को देखा और वो बेहद निराश दिखे. "क्या तुम में से कोई ऐसा नहीं है जो मुझे यह बता सके कि रात को कैसे भगाया जाए और मेरी बेटी को फिर से कैसे खुश किया जाए!"

यह सुनकर सभी चुप हो गए. इसमें हिम भालू भी शामिल था. उसका सिर लटका हुआ था. उसे आँखें मिलाने में शर्म आ रही थी. उनमें एक सफेद दाढ़ी वाला बूढ़ा व्यक्ति भी था. वो बिना कुछ कहे सलाहकारों की बहस सुन रहा था. अंत में वो बोला, "मेरे अच्छे राजा और रानी," उसने

कहा, "अपने जीवन में मैंने पूरी दुनिया की यात्रा की है, और कई अद्भुत चीजें देखी हैं. जब मैं छोटा लड़का था तब अपनी एक दक्षिण यात्रा में, हम एक समुद्र में काफी आगे गए और अंत में हम एक शक्तिशाली नदी के मुहाने पर आए. हम नदी के ऊपर चलते रहे और अंत में हम नदी के किनारे एक खूबसूरत सफेद शहर में पहुंचे. उसका नाम था हेलियोपोलिस - यानी सूर्य का शहर. उस शहर में मुझे कई अजीब और चमत्कारिक चीजें देखने को मिलीं. लेकिन उनमें सबसे अजीब और नायाब एक पक्षी था, जो वहां के शासक - खलीफा के आंगन में, एक सोने के पिंजरे में बंद था! खलीफा ने उसे फीनिक्स, या फायरबर्ड (अग्निपक्षी) नाम दिया था. अग्निपक्षी किसी आदमी की ऊंचाई से दोगुना था, उसका हरा सिर और सोने की शिखा सूरज की किरणों की तरह चमक रही थी! उसके पंख माणिक जैसे लाल थे और उसकी लंबी नीली पूंछ सोने से रंगी हुई थी! जब उसने अपनी चोंच खोली तो उसका गला प्रकाश के एक रत्न की तरह चमकने लगा. मैं बहुत देर तक वहीं खड़े रह कर उसे निहारता रहा फिर अंत में उसने मुड़कर मेरी ओर देखा. मैं उसे देखकर अवाक रह गया! लोगों ने कहा कि जब अग्निपक्षी अपने पंख फैलाता है तो वे सूरज की तरह दमकते हैं, जिससे चकाचौंध होकर आप अंधे तक हो सकते हैं! हम में से कोई भी राजकुमारी को खुश करने के लिए सूरज को वापस लाना नहीं जानता है. इसलिए अगर राजकुमारी के पास लंबी सर्दियों में रात में देखने के लिए वो चमत्कारिक अग्निपक्षी होगा तो बहुत अच्छा होगा!"

राजा ने अपनी दाढ़ी को सहलाया और बूढ़े की बात पर सोचा. चूँकि कोई भी सूरज को उसके नियत समय से पहले वापस लाना नहीं जानता था, इसलिए अग्निपक्षी को लाना ही उन्हें अपनी बेटी को फिर से खुश करने की एकमात्र उम्मीद लगी.

"उस नगर का शासक - खलीफा इस अग्निपक्षी के लिए हमसे क्या लेगा?" राजा ने बूढ़े से पूछा. लेकिन इससे पहले कि राजा सलाहकारों से सूर्य वापस लाने की विफलता पर प्रायश्चित करने के लिए कहता, बूढ़ा बीच में चिल्लाया, "सोना, महामहिम! अगर आपके पास पर्याप्त सोना होगा, तो आप कुछ भी खरीद पाएंगे!"

"मेरे पास सोने के भंडार हैं!" राजा ने कहा. बोरेलिस के पहाड़ सोने से भरे हुए हैं! वहां सुबह-सुबह जाने के लिए एक जहाज और चालक दल तैयार करें! मैं उत्तरी हवा को, जहाज़ के पाल को पूरी तरह से भरने की आज्ञा दूंगा!"

फिर जब लंबी सर्दियों की रात आखिर में समाप्त हुई और सूरज ने क्षितिज से ऊपर सिर उठाकर देखा, तो राजा और उनका दल, बर्फ में एक चैनल के माध्यम से, समुद्र में दक्षिण स्थित हेलियोपोलिस देश की ओर रवाना हुआ. कई हफ्तों के बाद तेज़ हवा और जहाज़ के पालों की मदद से वे अंत में पूर्व की ओर उस समुद्र में पहुंचे जिसका ज़िक्र बूढ़े ने किया था. दिन, तेजी से गर्म हो रहे थे. कई हफ्तों के नौकायन के बाद वे समुद्र में बहने वाली शक्तिशाली नदी के मुहाने पर पहुंचे. और अंत में वे सूर्य के नगर हेलीओपोलिस में पहुँचे, जो नदी के तट पर दमक रहा था! बंदरगाह में लंगर डालने के बाद, राजा अपने दल के साथ खलीफा के आंगन की ओर गए. और वहाँ, एक साएदार पेड़ के नीचे सोने के पिंजरे में, वो शानदार फायरबर्ड (अग्निपक्षी) था. अग्निपक्षी देखने में बिल्कुल बूढ़े आदमी के वर्णन जैसा ही था!

"वास्तव में वो पक्षी अनमोल है!" राजा बड़बड़ाया. हो सकता है खलीफा, अग्निपक्षी को बेचने से मना कर दे. इस विचार मात्र से ही राजा बहुत दुखी हुआ. कहीं खलीफा यह न कह दे, "मैं अपने अग्निपक्षी के बिना ज़िंदा नहीं रह पाऊंगा?“

यह सुनकर कि दूर देश से कुछ अजनबी आए हैं जो उसके पक्षी को निहार रहे हैं, खलीफा महल से निकलकर उनसे मिलने पहुंचा. खलीफा, मेहमानों को अपना उदार आतिथ्य प्रदान करना चाहता था.

"हम बोरेलिस देश से आए हैं जो उत्तरी हवा का घर हैं," राजा ने कहा. "हम आपके चमत्कारिक अग्निपक्षी और उसके पंख फैलाने पर होने वाले उग्र और रमणीक प्रदर्शन को देखने के लिए आए हैं."

खलीफा ने प्रसन्नता से कहा, "यही वो अग्निपक्षी है जिसे आप देख रहे हैं. लेकिन जहां तक पंख फैलाने पर उसके उग्र प्रदर्शन का सवाल है किंवदंतियों के अनुसार वो आग में पैदा हुआ था और हर पांच सौ साल में अपनी राख से उठता है. ... अफसोस! मैं वो आपको बता नहीं पाऊंगा. वो अग्निपक्षी इस पिंजरे में तब से बंद है जब मैं पैदा भी नहीं हुआ था. और तब से अग्निपक्षी ने अभी तक, कभी भी अपने पंख नहीं फड़फड़ाए हैं, एक बार भी नहीं."

"अग्निपक्षी के बारे में किंवदंतियां सच हैं या नहीं, यह भी हमें नहीं पता," राजा ने कहा, "लेकिन हम यहां यह जानने के लिए आएं हैं कि क्या आप अग्निपक्षी को हमें दे सकते हैं, ताकि मेरी बेटी, अरोरा, लंबी सर्दियों की रातों में उसे देखकर खुश रहे."

"अग्निपक्षी के साथ रिश्ता तोड़ना!" खलीफा ज़ोर से चिल्लाया! "वो अमूल्य है! अपनी तरह का एकमात्र! उस जैसा कोई अन्य नहीं हैं!" लेकिन फिर, यह याद करते हुए कि राजा और उसका दल, उसके अतिथि थे, ख़लीफ़ा का मिज़ाज़ अचानक बदल गया, और खलीफा फिर से दयालु और मिलनसार हो गया. खलीफा यह जानने के लिए उत्सुक था कि राजा बोरियस अग्निपक्षी का क्या मूल्य देंगे (यद्यपि, सच्चाई यह थी कि खलीफा का, पक्षी को बेचने का कोई इरादा नहीं था!). खलीफा ने अपने दोनों हाथ आपस में जोड़े और अपनी आँखें पिंजरे की ओर कीं. "आप अग्निपक्षी के लिए क्या देंगे?" खलीफा ने खुश होकर पूछा.

राजा ने अपने दल के दो सदस्यों को इशारा किया. उन्होंने जमीन पर पड़े एक बड़े चमड़े के बोरे को उठाया और उसे डगमगाते हुए खलीफा के पैरों के पास रख दिया.

"आप जितना चाहें, उतना सोना ले सकते हैं," राजा ने बोरे की ओर इशारा करते हुए कहा. "अगर मेरी बेटी खुश होती है, तो उतना सोना मेरे लिए बहुत ज्यादा नहीं होगा!"

खलीफा ने अपने पैरों में पड़े सोने की भारी बोरी को देखा. "हे भगवान," उसने सिर हिलाते हुए और अपने चेहरे को हाथ से थपथपाते हुए कहा. खुले आंगन में तेज धूप में खड़े होने के कारण खलीफा को काफी गर्मी महसूस हो रही थी. "मेरे पास खुद इतना सोना है कि मैं तीन जन्मों में भी उसे खर्च नहीं कर पाऊंगा. मैं भला और सोने का क्या करूंगा?"

यह सुनकर राजा का दिल बैठ गया. उसने अपनी दाढ़ी को सहलाया और यह सोचने की बहुत कोशिश की, कि खलीफा को और क्या पसंद आएगा. अचानक उसकी आँखें चमक उठीं! राजा ने अपने हाथों से अपना मुकुट उतारा और उसे खलीफा को दिया.

"मेरा ताज!" राजा ने कहा. "मेरा ताज ले लें! इसमें पृथ्वी पर सबसे कीमती गहने हैं - बोरेलिस के पहाड़ों के अनमोल हीरे! जो अंधेरे में भी दमकते हैं!"

"हे भगवान," खलीफा फिर से चिल्लाया. वो पिंजरे में बंद अग्निपक्षी को देख रहा था और अपने माथे से पसीना पोंछ रहा था, क्योंकि अब उसे वास्तव में बहुत गर्मी लग रही थी. "मेरे पास इतने गहने और आभूषण हैं कि मैं उन्हें तीन जन्मों में भी नहीं पहन पाऊंगा. मैं भला और गहनों को क्या करूंगा?“

यह सुनते ही राजा बोरियस का हृदय एकदम डूब गया. बेटी के पास खाली हाथ लौटने का विचार वो सहन नहीं कर पाए. उन्होंने झल्लाहट से अपनी दाढ़ी खींची और कुछ ऐसा सोचने की कोशिश की जिससे वो पक्षी का सौदा कर सकें. खलीफा को तेज धूप में खड़े होने से बहुत पसीना आ रहा था. वो धूप से बचने के लिए लम्बे समय से पेड़ की छाँव की तरफ देख रहे थे. खलीफा को पेड़ की ओर देखकर राजा अचानक मुस्कुराए.

"शायद," फिर राजा ने खुश होकर कहा, "आप मेरी कुछ हवा के बदले में अपना अग्निपक्षी मुझे देना चाहें."

"हवा का टुकड़ा, वो क्या?" खलीफा ने मुड़कर राजा की ओर देखा. "आपका उससे क्या मतलब ...?"

लेकिन इससे पहले कि खलीफा कुछ और कह पाता, राजा बोरियस ने अपना हाथ लहराया और तुरंत ठंडी हवा के एक झोंके ने आंगन को भर दिया. हवा से पेड़ के पत्ते हिलने लगे और हवा ने खलीफा के चेहरे का पसीने भी तुरंत सुखा दिया. खलीफा ने आश्चर्य से राजा की ओर देखा.

"आप जहां भी जाएंगे, यह हवा आपका पीछा करेगी," राजा ने समझाया, "और जब तक आप जीवित रहेंगे, वो हवा आपको और आपके महल को ठंडा रखेगी."

"वो सच में एक अमूल्य प्रस्ताव है!" खलीफा चिल्लाया. उसने अपनी बाहों को ऊपर हवा में लहराया और फिर वो चारों ओर घूमने लगा और ठंडी हवा का मज़ा लेने लगा. "अग्निपक्षी, अब आपका है!" खलीफा ने कहा.

खलीफा के उदार आतिथ्य और हेलियोपोलिस के चमत्कारों का आनंद लेने के बाद, राजा और उसका दल, अग्निपक्षी के साथ बोरेलिस की ओर वापस रवाना हुए. राजा की आज्ञा के अनुसार हवा, पालों को दिन-रात, ज़ोर से धक्का देती रही.

लेकिन गर्मी का मौसम समाप्त हो रहा था. जब तक वे ध्रुवीय सागर के किनारे पहुँचे, दिन लगातार छोटे हो रहे थे. समुद्र के हिमखंडों ने उनके जहाज़ को चारों ओर से घेर लिया था. जैसे-जैसे वे उत्तर की ओर आगे बढ़े उनके जहाज़ के पाल और डेक पर बर्फ जमने लगी. बड़ी मुश्किल से उनके जहाज़ ने खुले चैनल को पार किया. चैनल पार करने के बाद तुरंत एक दुर्घटना घटी और एक बड़े हिमखंड ने चैनल को बंद कर दिया! जब तक राजा अपने महल में पहुँचे, तब तक सर्दियों की लंबी रातें शुरू हो चुकी थीं.

जब अरोरा ने डेक पर पिंजरे में शानदार अग्निपक्षी को देखा तो उसने अपने पिता को गले लगाया और वो खुशी से नाचने लगी. पिंजरे को तुरंत आंगन में रखा गया ताकि वो अपने बेडरूम की बालकनी से, पक्षी को निहार सके.

"ओह, वो कितना सुंदर पक्षी है!" अरोरा ने खुशी से ताली बजाते हुए कहा. "मैं उसके उज्ज्वल चांदी के पंखों को फैलते देखने का और इंतजार नहीं कर सकती हूं!“

लेकिन अरोरा और बाकी लोग व्यर्थ में उसका इंतजार करते रहे क्योंकि अग्निपक्षी न तो अपनी जगह से हटा और न ही उसने कोई पंख हिलाया. अग्निपक्षी ने अपने नए परिवेश को निहारने में, या उसे देखने आए लोगों में भी कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई. अरोरा परेशान हुई, और फिर बेहद चिंतित हुई. सोने से पहले वो अक्सर अपनी बालकनी से अग्निपक्षी से बातें करती थी, लेकिन पक्षी उसकी तरफ देखता तक नहीं था. एक बार महल में सभी लोगों के सोने के बाद, अरोरा पिंजरे के पास गई और उसने अपनी सुंदर, मधुर आवाज में, धीरे-धीरे एक गीत गाया:

आग में पैदा हुए, सुन्दर पक्षी

मेरे दिल की तमन्ना पूरी करो!

प्रकाश पुंज वाले पक्षी, अपने पंख फैलाओ,

और आज रात, मेरे लिए भोर लाओ!

अग्निपक्षी ने धीरे से अपना सिर घुमाया और पिंजरे की सलाखों के भीतर से देखा. उसकी बड़ी-बड़ी नीलम जैसी नीली आंखों के कोने से एक-एक सुनहरा आंसू टपका, और वो पिंजरे के पेंदे पर झिलमिलाते हुए गिरा. जब अरोरा ने यह दुखद नज़ारा देखा तो वो इतनी परेशान हुई कि उसने तुरंत अपने पिता को जगाया, जिन्होंने फ़ौरन चिकित्सक को बुलाया. चिकित्सक ने पिंजरे की सलाखों के बीच हाथ डाला और अग्निपक्षी के स्तन को छुआ, उसकी झुकी हुई पूंछ, फटे हुए पंख और सुस्त आँखों का मुआयना किया.

"बताओ," राजा ने उत्सुकता से पुछा. "क्या मामला है?"

"यह पक्षी मर रहा है," चिकित्सक ने कहा. "वो दक्षिण में इतने लंबे समय तक कैद में रहा, फिर उसने इतनी लंबी यात्रा की, और अब नित्य अंधकार के कारण ... उसने अपनी जीने की इच्छा खो दी है. मुझे नहीं लगता कि वो सुबह तक जीवित बचेगा.“

"ओह पापा!" अरोरा ने रोते हुए कहा. "यदि पक्षी मर ही रहा है, तो उसे अपनी पसंद के स्थान पर जाकर मरने दें! उसे मुक्त करें! कृपया उसे स्वतंत्र करें!"

फिर राजा ने आदेश दिया, और कुछ ही मिनटों में पिंजरे की छत और दीवारें हटा दी गईं. अब पक्षी क्या करेगा यह देखने के लिए सब लोग पीछे हट गए.

महल में आने के बाद पहली बार, अग्निपक्षी ने अपने परिवेश पर कुछ ध्यान दिया. उसने सोने की कलगी वाले अपने सिर को आगे-पीछे हिलाया. उसने अपनी नीलम जैसी नीली आँखों से, दूर स्थित बर्फ़ की चोटियों को टकटकी लगा कर देखा. उसकी आँखें, बर्फ की चोटियां और तारों की रोशनी में चमक रही थीं. अग्निपक्षी ने अपना सिर पीछे झुकाया और वो तारों की ओर देखने लगा और फिर, अत्यंत तेज़ी से - पलक झपकते ही, उसने अपने शक्तिशाली पंख फैलाए! सूर्य जैसी तेज चमक के साथ, अग्निपक्षी रात के आकाश में उछला और उड़ा!

उस दैवीय दृश्य को देखकर हर कोई हैरान रह गया. जब अरोरा ने अपनी प्यारी चिड़िया को आसमान में ऊपर उड़ते हुए देखा तब वो खुशी से रो पड़ी! उसके पंखों से इंद्रधनुषी प्रकाश पुंज एक तूफान की तरह चारों ओर बरस रहा था. उसका प्रकाश झिलमिलाते हुए पहाड़ों पर नाच रहा था और जमे हुए समुद्र को प्रतिबिंबित कर रहा था. ऐसा लग रहा था कि बर्फ में आग लग गई हो और भोर लौट रहा हो! अग्निपक्षी जितना अधिक ऊंचा उठा, उसका ज्वलंत प्रदर्शन उतना ही धूमिल और फीका होता गया. रात के आकाश में, वो कहाँ उड़कर गया? अंत में वो जहाँ विलीन हुआ, वहां पर हल्के हरे रंग के प्रकाश की केवल एक आभा ही बाकी बची. फिर धीरे-धीरे करके वो भी लुप्त हो गई.

"अग्निपक्षी उड़ गया," राजा बोरियस ने शांति से कहा. उन्होंने अरोरा के कंधे पर अपना हाथ रखा और उसे दिलासा दिलाई. "शायद यह अच्छा ही हुआ. वो अपना बाकी जीवन एक सोने के पिंजरे में बिताने के लिए बहुत सुंदर था.“

लेकिन अरोरा अपने पक्षी को खोने के बाद खुश नहीं थी. राजा बोरियस और महल के बाकी लोगों के सोने जाने के बाद, वो बहुत देर तक अपनी बालकनी में खड़े होकर रात के आसमान की ओर ताकती रही. शायद वो अपने प्रिय अग्निपक्षी के लौटने की प्रतीक्षा कर

रही थी. लेकिन उसके लिए वो काली रात, बहुत उदास थी. शायद वो उसके जीवन की सबसे उदास रात थी. आसमान में तारे बर्फीली आग की तरह लटके हुए थे और उस पर अपनी ठंडी रोशनी बिखेर रहे थे. अंत में, वो अपने बिस्तर पर गई और सोने से पहले दुखी होकर कुछ देर रोई. उसने खुद से वादा किया कि सुबह को उठने के बाद वो अपने प्रिय अग्निपक्षी को ढूंढ निकालेगी, चाहे वो कहीं भी उड़कर गया हो, चाहें वो पृथ्वी के दूसरे छोर पर ही क्यों न हो.

कुछ समय बाद जब वो सो गई, तब शयनकक्ष में पंखों के फड़फड़ाने की गड़गड़ाहट और धधकती रोशनी की चमक ने, अरोरा को जगा दिया. जब वो उठकर बैठी तो उसने अग्निपक्षी को अपने बरामदे में बैठा पाया. वो खिड़की में से उसकी ओर देख रहा था. उसकी बड़ी नीली आँखें अंगारों की तरह चमक रही थीं! अरोरा ने ख़ुशी से चिल्लाकर अपने पिता और महल के बाकी लोगों को जगाया. फिर वो बाहर निकली और उसने अग्निपक्षी के गले में अपनी बाहें डाल दीं!

"पापा ज़रा देखें!" वो चिल्लाई. "अग्निपक्षी वापस आ गया है! वो वापस आ गया है! मैं उसे फिर कभी भी अपनी आँखों से ओझल नहीं होने दूंगी! कभी नहीं!"

और उसके बाद जब भी अग्निपक्षी उड़ान भरता, अरोरा अपनी बालकनी में खड़ी रहकर रात के आकाश में पक्षी के सुंदर इंद्रधनुषी टिमटिमाते प्रकाश पुंज को निहारती थी. जब वो वापस उड़कर आता तो भी वो पक्षी की हर गति को बड़े ध्यान से देखती थी. अंत में तमाम करतब दिखाने के बाद अग्निपक्षी बालकनी में आकर उतरता था. अरोरा का अग्निपक्षी से इतना गहरा लगाव हो गया था कि अब वो बहुत कम ही सोती थी. उसके दिल में डर था कि कहीं अग्निपक्षी क्षितिज के ऊपर उड़कर कहीं सदा के लिए गायब न हो जाए. कहीं पक्षी, अरोरा को ठंडी रात में, बालकनी में हमेशा अकेले खड़े रहने के लिए छोड़ न जाए.

उसका डर इतना बढ़ गया कि एक बार जब अग्निपक्षी उड़ने के लिए अपने पंख फैला रहा था, तो अरोरा ने अचानक उसकी पीठ पर छलांग लगा दी और उसकी सुनहरी गर्दन पर अपना हाथ फेरा! अग्निपक्षी हवा में उछला और अरोरा उसकी पीठ से चिपकी रही. पक्षी महल के ऊपर से उड़ा और उसने पहाड़ों की चोटी पर चक्कर लगाए. उसके पंख चमक रहे थे! पहाड़ हरी लपटों से जल रहे थे जो उनके बर्फीले ढलानों के ऊपर-नीचे प्रकाश के बिम्ब टिमटिमा रहे थे, जबकि उसकी लाल और पीली आग, आकाश से क्षितिज तक बह रही थी! ऐसा स्वर्गीय प्रदर्शन पहले कभी किसी ने नहीं देखा था! सभी लोग झिलमिलाते प्रकाश के प्रदर्शन से चकाचौंध खड़े थे. प्रकाश के बिम्ब, आकाश और पहाड़ों की चोटियों पर नृत्य कर रहे थे! और अंत में जब अरोरा और अग्निपक्षी नीचे उतरे तो राजा बोरियस और हिम महारानी भी, अपनी बेटी को अग्निपक्षी पर सवारी करने के लिए डांट नहीं पाए!

फिर उसके बाद से, अरोरा और अग्निपक्षी दोनों की, एक पक्की जोड़ी बन गई. अग्निपक्षी तभी उड़ता था, जब अरोरा उसकी पीठ पर बैठती थी. बाकी समय वो बालकनी की रेलिंग पर बैठा रहता था या फिर बेडरूम की खिड़की में से अपनी बड़ी नीलम जैसी नीली आँखों से, बाहर घूरता रहता था. अग्निपक्षी, अरोरा के बाहर आने का इंतज़ार करता था कि ताकि वे एक-साथ अंधेरे ध्रुवीय आकाश में उड़ सकें.

फिर अंत में लंबी सर्दियों की रातें समाप्त हुईं और आधी रात के सूरज ने, पहली बार क्षितिज से ऊपर झाँका. अरोरा ने अपनी बालकनी में कदम रखा और अपने प्रिय अग्निपक्षी को नीचे आँगन में देखा. अग्निपक्षी उदास लग रहा था और उसकी आंखों की चमक गायब थी. अरोरा ने यह खबर अपने पिता को बताई, जिन्होंने तुरंत शाही चिकित्सक को बुलाया. चिकित्सक ने चिड़िया को गौर से देखा - उसका झुका हुआ सिर, सुस्त मिज़ाज़, और झुके पंखों को देखा. यहाँ तक कि जब अरोरा ने अग्निपक्षी के गले में अपने हाथ डालकर उसके पंखों को सहलाया तब भी पक्षी की सुंदर नीली आँखों में प्रकाश की चमक वापस नहीं आई. उसके बाद चिकित्सक ने आकाश में चमकते मध्यरात्रि के सूर्य को देखा, और फिर अग्निपक्षी की ओर देखा.

"वो मर रहा है," चिकित्सक ने कहा. "पक्षी का पूरा जीवन अब रात के आकाश में अपने ज्वलंत प्रतिबिंब को देखने पर केंद्रित है. लेकिन उसे लगता है कि वो सूर्य के प्रकाश से मुकाबला नहीं कर पाएगा. मुझे खेद है, लेकिन मुझे नहीं लगता है कि वो एक दिन से अधिक जीवित रहेगा."

यह सुनकर अरोरा व्याकुल हो उठी. "अरे, पापा!" वो रोई. "क्या आप कृपा कर सूर्यास्त नहीं करवा सकते और रात को वापस नहीं ला सकते, जिससे मेरा प्रिय अग्निपक्षी मरने से बच जाए और फिर हम एक-साथ रात के आसमान में उड़ सकें?"

राजा बोरियस ने तुरंत अपने सभी सलाहकारों को बुलाया.

"मेरी बेटी दुखी है क्योंकि उसका प्रिय अग्निपक्षी मर रहा है," उन्होंने कहा. "जब वो उड़ता है तो वो सूर्य की उज्जवल चमक में अपना प्रतिबिंब देख नहीं पाता है. क्या अग्निपक्षी को बचाने के लिए, सूर्य को उसके नियत समय से पहले अस्त करने का, और रात्रि को वापस लाने का, आपके पास कोई तरीका है?"

एक बार फिर सलाहकारों ने सोच वाली अपनी लंबी सफेद टोपियां पहनीं और उन्होंने दिन भर चर्चा की (अगर आपको याद हो, तो उत्तर में दिन, छह महीने लंबा होता था!) लेकिन राजा की बची हुई आइसक्रीम खाने और बर्फ वाली शराब की आखिरी चुस्की लेने के बाद भी, वे राजा को सूरज को जल्दी अस्त करने की विधि नहीं बता सके.

तब राजा ने महान बर्फीले उल्लू से पूछा. उल्लू ने कहा, "सूरज का जल्दी अस्त! मैंने आज तक ऐसा होते, कभी नहीं देखा!" हिम भालू ने गुर्राते हुए उत्तर दिया, "मैं उल्लू की राय से सहमत हूँ!" और यूनिकॉर्न व्हेल ने अपनी पूंछ लहराते हुए कहा, "मैं उन दोनों से सहमत हूं!"

अंत में वो बूढ़ा बोला, जिसने सबसे पहले राजा को अग्निपक्षी के बारे में बताया था.

"अच्छे राजा," उसने कहा, "मैंने सात समुद्रों को पार किया है. दक्षिण की ओर अपनी एक यात्रा में मैंने पाया कि जब दुनिया के इस उत्तरी छोर पर प्रकाश था, तो दक्षिणी छोर पर अंधेरा था. इसका मतलब है कि अगर राजकुमारी अरोरा और उनका अग्निपक्षी इस समय दुनिया के दक्षिणी छोर पर होते, तो वहां अंधेरा होता, और तब अग्निपक्षी वहां, एक बार फिर रात के आकाश में अपने स्वर्णिम प्रतिबिंब को देख पाता."

एक पल के लिए राजा अपने विचारों में खोया रहा और फिर उसने उदास होकर कहा, "मेरे भाई, राजा ऑस्टर, दुनिया के उस छोर पर दक्षिणी हवा पर शासन करते हैं, लेकिन मैं उनके महल में कभी गया नहीं, और मुझे वहां जाने का रास्ता भी नहीं पता."

"मुझे पता है," एक छोटी, ऊँची आवाज़ पीछे से चिल्लाई. हर कोई आश्चर्यचकित होकर आर्कटिक टर्न की लाल चोंच और काली टोपी को घूरने लगा. आर्कटिक टर्न खुली खिड़की में बैठी थी, जहां वो सूर्य को वापस लाने की सभी चर्चाओं को सुन रही थी. "मैं कई बार राजा ऑस्टर के महल में गई हूं," टर्न ने कहा. "जब यहां सर्दी होती है, तो मैं वहां उड़कर चली जाती हूं क्योंकि तब वहां पर गर्मी होती है. और जब वहां सर्दी होती है, तो मैं यहां उड़कर चली आती हूं. मैं खुशी से राजकुमारी अरोरा और अग्निपक्षी को रास्ता दिखाऊंगी. पर मेरी गैर-मौजूदगी में आप में से किसी को मेरे परिवार की देखभाल करनी पड़ेगी.“

"मैं खुद तुम्हारे परिवार की देखभाल करूंगा!" राजा खुश से चिल्लाया. "उनकी बेहतरीन देखभाल होगी!"

उसके बाद राजा उस बूढ़े आदमी की ओर मुड़ा. "तुमने मेरी बहुत अच्छी सेवा की है," राजा ने कहा, "अपनी कृतज्ञता ज़ाहिर करने के लिए मैं तुम्हें एक भेंट देता हूँ. तुम साल में किसी भी एक रात के लिए मेरी हवा पर सवारी कर सकते हैं, जिससे तुम सभी लोगों के बीच अपने ज्ञान और खुशी के उपहारों को बांट सको, बिल्कुल वैसे ही जैसा तुमने मेरे, और मेरे परिवार के लिए किया!“

फिर उसके बाद टर्न, अरोरा और अग्निपक्षी ने ऑस्ट्रेलिया के लिए कूच किया जहाँ पर दक्षिणी हवा का घर था. भूमध्य-रेखा को पार करने के बाद, सूर्य नीचे, और नीचे डूबता गया. अंत में सूर्य क्षितिज के नीचे चला गया और आकाश में फिर से अंधेरा छा गया. अपने इंद्रधनुषी चमकीले पंखों के साथ, अग्निपक्षी और राजकुमारी अरोरा ने, दक्षिणी ध्रुव के पूरे रास्ते, टर्न का पीछा किया. अंत में वे दक्षिणी हवा और राजा ऑस्टर के महल में पहुंचे. राज्य के सभी लोग बाहर खड़े होकर ताक रहे थे, क्योंकि उन्होंने पूरी रात, आकाश में उत्तर की ओर से, अग्निपक्षी के जलते हुए प्रकाश को नज़दीक आते देखा था. लोग डर गए थे क्योंकि उन्हें वो एक बड़ा खतरा लग रहा था. लेकिन उनका डर तब खुशी में बदल गया जब उन्होंने अग्निपक्षी को महल के आंगन में उतरते हुए देखा. उन्होंने एक सुंदर महिला को भी पक्षी की पीठ से नीचे उतरते

देखा. राजा ऑस्टर की ख़ुशी का तब कोई ठिकाना नहीं रहा जब उन्हें पता चला कि वो महिला उनकी भतीजी राजकुमारी अरोरा थी, जो उनसे मिलने आई थी!

"मैं यहाँ केवल तब तक रह सकती हूं जब तक यहाँ अंधेरा रहेगा," अरोरा ने राजा ऑस्टर को समझाया, "अग्निपक्षी केवल तभी खुश होता है जब वो रात के आकाश में उड़ते समय अपना ज्वलंत प्रतिबिंब देख पाता है. जैसे ही यहाँ पर सूरज उगेगा और उजाला होगा तब हम यहाँ से प्रस्थान करेंगे और फिर से उत्तर की ओर उड़कर जाएंगे जहाँ तब अंधेरा होगा."

"तुम यहाँ जितनी देर चाहो, रुको!" राजा ऑस्टर के कहा. "स्वर्ग के इस भाग में तुम और तुम्हारे अग्निपक्षी से अधिक सुंदर और कुछ भी नहीं हो सकता है. तुम दोनों हमारी इस लंबी ध्रुवीय रात में, भोर लाए हो!"

और फिर अरोरा अपने चाचा, राजा ऑस्टर के साथ रही. उसने दुनिया के इस हिस्से के रात्रि आकाश को, दक्षिणी-रोशनी से भर दिया! और जब अंत में सूरज वापस लौटा, तो अरोरा ने राजा ऑस्टर और उसके लोगों से एक उदास अलविदा कहा, और फिर वो उत्तर की ओर अपने पिता के महल में चली गई, जहां सूरज पहले ही डूब चुका था.

और तब से, अरोरा और उसका प्रिय अग्निपक्षी, दोनों राज्यों के बीच आगे-पीछे लगातार उड़ रहे हैं, और ध्रुवों की लंबी, स्याह, उदास रातों में भोर लाते हैं!

****

बूढ़े आदमी ने मुझे अपनी बाहों में उठाया और फिर वो मुझे वापस पहाड़ी के नीचे मेरे घर में ले गया. "देखो, यह कहानी बताती है कि उत्तरी और दक्षिणी रोशनी ने कैसे जन्म लिया!" उसने मुझसे कहा.

"आप अरोरा और उसके अग्निपक्षी को अपनी मनमर्ज़ी से नीचे कैसे लाते हैं?" मैंने आश्चर्य और बड़ी उत्सुकता से पूछा.

बूढ़ा आदमी मेरे बेडरूम की खिड़की से अंदर झुका और उसने मुझे वापस मेरे बिस्तर पर लिटा दिया. "देखो," उसने अपने होठों पर उंगली रखते हुए कहा, "यह एक रहस्य है! लेकिन अगर तुम मुझसे वादा करो कि तुम अपने घर से फिर कभी नहीं भागोगे, तो मैं तुम्हें वो भी रहस्य बता दूंगा. देखो, आज रात अगर मैं हवा की सवारी करके अपने उपहार नहीं ला रहा होता तब फिर मैंने तुम्हें उस पेड़ के नीचे सोते हुए कभी नहीं देखा होता.“

मैने उससे वादा किया. और फिर, जैसे ही वो मेरे ऊपर कंबल खींचने के लिए ऊपर उठा, उसने मेरे कानों में वो रहस्य फुसफुसाया. मैं उससे बहुत पूछना चाहता था कि आखिर वो कौन था और वो कहाँ रहता था, लेकिन मैं बहुत गहरी नींद में था और पहाड़ी पर चढ़ने से मैं बहुत थक गया था. इसलिए मुझे याद नहीं कि वो कब बाहर गया और उसने कब खिड़की बंद की.

जब मैं जागा, बाहर तब भी बहुत अंधेरा था. मैं उस कहानी के हर शब्द को याद कर रहा था जो उस बूढ़े आदमी ने मुझे सुनाई थी. मैं बेताबी से सुबह होने का इंतजार कर रहा था, क्योंकि मैं सभी लोगों को अरोरा और उसके अग्निपक्षी की कहानी सुनाना चाहता था, जो उनके लिए मेरा क्रिसमस उपहार था! मैं उठकर बैठा और मैंने खिड़की खोली यह देखने के लिए कि वो बूढ़ा मुझे मेरे बिस्तर पर रखकर किस ओर गया था. लेकिन मुझे तारों की रोशनी में जो कुछ दिखाई दिया वो सिर्फ मेरे खुद के पैरों के निशान थे जो मेरी खिड़की से दूर जा रहे थे.

और तब मुझे पता चला कि असल में मैं एक सपना देख रहा था! वो कहानी बिल्कुल सच नहीं थी! कोई अग्निपक्षी या उसकी पीठ पर सवारी करने वाली राजकुमारी नहीं थी! मेरी आँखों में फिर से आँसू भर आए क्योंकि मेरे पास क्रिसमस पर किसी को देने के लिए कोई उपहार नहीं था! लेकिन मैं वहां बैठकर अंधेरे आकाश में धीरे-धीरे चल रही प्रकाश की हल्के हरे रंग की पट्टियों को देख सकता था. तभी मुझे अचानक वो रहस्य याद आया जो बूढ़े ने, मुझे बिस्तर पर लिटाते समय, और मुझे ढँकते समय, मेरे कान में फुसफुसाया था:

अगर तुम ठंडी तारों वाली रात में ठीक से सीटी बजाओगे

जब आकाश में लाल, हरी और नीली लपटे उठेंगी

तब वे एक सरसराहट के साथ जमीन पर उतरेंगी,

और तुम्हारी एक इच्छा पूरी करेंगी!

मैंने पहले धीरे से सीटी बजाई और साथ में अरोरा और उसके अग्निपक्षी के रात्रि आकाश में एक-साथ सवारी करने की बात भी सोची. फिर मैंने जोर से सीटी बजाई. अचानक रात में एक आग धधक उठी, और पहाड़ों की चोटियों पर नाचने लगी. उसने आकाश और जंगल को भर दिया, बिल्कुल वैसे ही जैसे उसने उस बूढ़े आदमी के लिए किया था! मैंने ऊपर के आकाश में पंखों की सरसराहट की आवाज़ सुनी, और इस

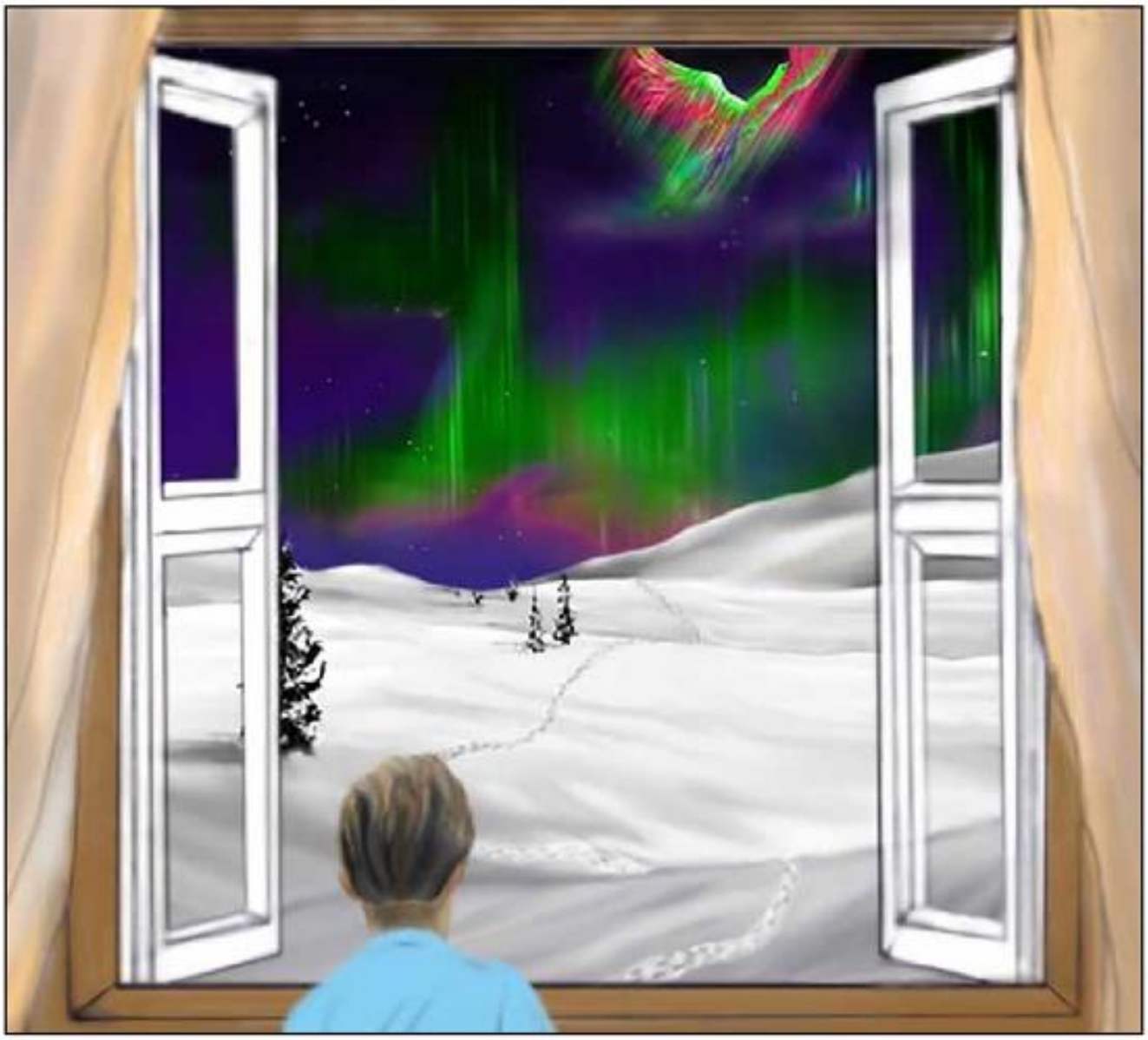

बार जब मैंने ऊपर देखा, तो मैं यकीन के साथ कह सकता हूँ कि मैंने एक उड़ते हुए बड़े पक्षी की परछाई ज़रूर देखी! मैं अपने बेडरूम की खिड़की के बाहर बर्फ पर झिलमिलाती और नाचती हुई रोशनी को घूर रहा था. मैं दुनिया में किसी अन्य चीज से ज्यादा यह जानना चाहता था कि आखिर वो बूढ़ा आदमी कौन था?

और फिर मैंने उसका नाम सुना, मेरे कान में किसी ने धीरे से फुसफुसाया;

और फिर वो तेज़ी से जलता हुआ प्रकाश पुंज, धीरे-धीरे गायब हो गया.

समाप्त

लेखक के बारे में

रिचर्ड टी. पार एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर हैं जो अमरीका के पैसेफ़िक-नॉर्थवेस्ट में रहते हैं. उन्होंने चार उपन्यास और कई लघु कथायें लिखी हैं. उन्होंने ओरेगन विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में डॉक्टर ऑफ आर्ट्स की डिग्री प्राप्त की है. उन्होंने अमरीका और ट्रोम्सो, नॉर्वे, यूरोप के विश्वविद्यालयों में, और यूरोपियन सेंटर फॉर नॉर्थेर्न लाइट्स के अनुसंधान केंद्र में पढ़ाया है. वह ऑम्सविल, ओरेगन के बाहर विल्लामेट घाटी में अपने छोटे से खेत पर रहते हैं.

ई-मेल: rtparr@wavecable.com

चित्रकार के बारे में

एंड्रे लोथे एक सेना अधिकारी हैं, जो ओस्लो की नॉर्वेजियन सैन्य अकादमी के स्नातक हैं. वह नॉर्वे में आर्कटिक सर्कल के ठीक ऊपर एक छोटे से शहर ओवसडबीर्ग (Oversbygd) में रहते हैं. पिछले बारह वर्षों में उन्होंने अपने खाली समय में एक कलाकार-प्रकृतिवादी और चित्रकार के रूप में अध्ययन और काम किया है.

ई-मेल: endrelot@hotmail.com

आभार

लेखक, पुस्तक डिजाइन और लेआउट के लिए *स्किपिंग स्टोन्स: ए मल्टीकल्चरल लिटरेरी* मैगज़ीन के कार्यकारी संपादक, श्री अरुण नारायण टोके की हार्दिक प्रशंसा व्यक्त करना चाहते हैं.

रिचर्ड टी. पार की अन्य पुस्तकें

एंड्रोमेडा राइजिंग (भाग 1)

एंड्रोमेडा राइजिंग (भाग 2)

वीनस मिरर

द फ्लेवर ऑफ़ पीचेस

द बिटररूट अफेयर

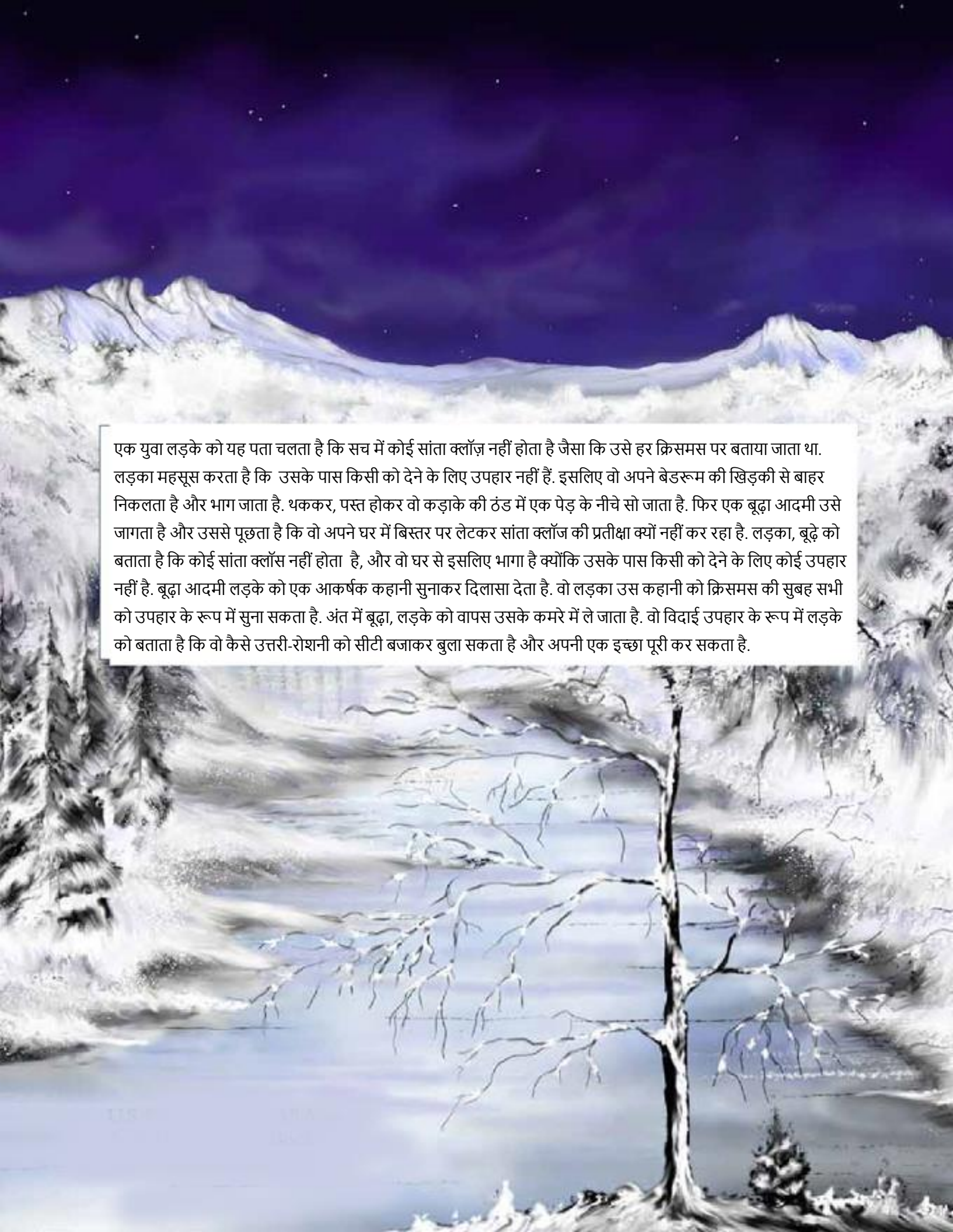

एक युवा लड़के को यह पता चलता है कि सच में कोई सांता क्लॉज़ नहीं होता है जैसा कि उसे हर क्रिसमस पर बताया जाता था. लड़का महसूस करता है कि उसके पास किसी को देने के लिए उपहार नहीं हैं. इसलिए वो अपने बेडरूम की खिड़की से बाहर निकलता है और भाग जाता है. थककर, पस्त होकर वो कड़ाके की ठंड में एक पेड़ के नीचे सो जाता है. फिर एक बूढ़ा आदमी उसे जागता है और उससे पूछता है कि वो अपने घर में बिस्तर पर लेटकर सांता क्लॉज की प्रतीक्षा क्यों नहीं कर रहा है. लड़का, बूढ़े को बताता है कि कोई सांता क्लॉस नहीं होता है, और वो घर से इसलिए भागा है क्योंकि उसके पास किसी को देने के लिए कोई उपहार नहीं है. बूढ़ा आदमी लड़के को एक आकर्षक कहानी सुनाकर दिलासा देता है. वो लड़का उस कहानी को क्रिसमस की सुबह सभी को उपहार के रूप में सुना सकता है. अंत में बूढ़ा, लड़के को वापस उसके कमरे में ले जाता है. वो विदाई उपहार के रूप में लड़के को बताता है कि वो कैसे उत्तरी-रोशनी को सीटी बजाकर बुला सकता है और अपनी एक इच्छा पूरी कर सकता है.